द्वीतीय अध्याय

राजेंद्र अवस्थी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय

2.1 जीवन परिचय

2.1.1 जन्म

2.1.2 बाल्यकाल और शिक्षा

2.1.3 नौकरी

2.1.4 पारिवारिक जीवन

2.1.5 काव्य सृजन का प्रारंभ

2.1.6 साहित्यिक योगदान

2.2 व्यक्तित्व

2.2.1 निस्वार्थ और दयालु वृत्ति

2.2.2 स्वाभिमानी प्रवृत्ति

2.2.3 असाधारण व्यक्तित्व

2.2.4 मित्रों के प्रति स्नेहभाव

2.2.5 परिवेशानुकूल बदलाव

2.2.6 विद्रोही व्यक्तित्व

2.2.7 अवस्थी जी पर प्रभाव

2.3 राजेंद्र अवस्थी का कृतित्व

2.3.1 उपन्यास साहित्य

2.3.2 कहानी साहित्य

2.3.3 नाटक साहित्य

2.3.4 यात्रा-वृत्तांत

2.3.5 वैचारिक साहित्य

2.3.6 संपादित साहित्य

2.3.7 अनुदित साहित्य

समन्वित निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

राजेंद्र अवस्थी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय

ग्रामांचलिक कथा साहित्य में राजेंद्र अवस्थी का स्थान प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में माना जाता है। राजेंद्र अवस्थी स्वातंत्र्योत्तर लेखकों में प्रमुख है। उन्होंने साहित्य में जो कुछ भी लेखन कार्य किया है, उसे पुरी ईमानदारी और सच्चाई से किया है। राजेंद्र अवस्थी स्वातंत्र्योत्तर लेखकों में प्रमुख है। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में विशेष रूप से कहानियों में आंचलिकता का रंग कुछ गहरा ही है। प्रारंभ में उन्होंने ग्रामीण तथा आदिम प्रधान अंचलों को कथा का आधार बनाया है। किंतु परवर्ती कहानियों में महानगर के किसी अंचल विशेष को भी उन्होंने चित्रित किया है।

नई कहानी व साठोत्तरी कहानी लेखकों में अवस्थीजी अग्रणी कथाकार है। उन्होंने सहजता के माध्यम से ओज तथा प्रांजलता के माध्यम से कलात्मक सौंदर्य को अभिव्यक्ति दी है। उनकी अधिकांश कहानियाँ साहित्य के ऊँचे स्तर को छूती हैं। अवस्थी जी की कहानियों में यथार्थ जीवन की कटूता, बनती बिगड़ती परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए मानव की गाथा अंकित की है। राजेंद्र अवस्थी नयी पीढ़ी के उन महत्वपूर्ण कहानीकारों में हैं जिन्होंने आधुनिक कहानी को उसके वास्तविक अर्थ की गरिमा दी हैं।

राजेंद्र अवस्थीजी के व्यक्तित्व का प्रमुख पहलू उनका लेखकीय व्यक्तित्व है। उनके व्यक्तित्व के साथ उनका परिचय भी वास्तविक है जो उनकी रचनाओं में चित्रित है। राजेंद्र अवस्थी जी ने व्यक्तिगत जीवन में जो देखा, अनुभव किया, भुगता तथा महसूस किया उसे अपने लेखन का माध्यम बना दिया। उनका व्यक्तित्व अत्यंत सहज, सरल, सादगी से भरा दिखाई देता है।

अवस्थी जी का जीवन आत्मनिर्भरता का एक सुंदर उदाहरण हैं। राजेंद्र

...EDKAR LIBRARY ... KOLHAPUR

अवस्थी जी का जीवन ज्यादा से ज्यादा पत्रकारिता में ही अधिकतर बीता है। बहुव्यस्त जीवन के साथ साथ उन्होंने साहित्य क्षेत्र में भी अपना स्थान पक्का कर दिया है। अपने अथक परिश्रम एवं कर्मठता आदि गुणों के कारण अवस्थी जी शीघ्र ही उन्नति करनें में सफल रहे हैं। कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, प्रकाशक, सम्पादक के रूप में अवस्थी जी का जीवन दु:ख से सुख की यात्रा लगता है। विविधमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक के रूप में राजेंद्र अवस्थी जी का स्थान उल्लेखनीय रहा हैं। उन्होंने अपने लेखन में स्थान-स्थान पर जीवनानुभव की अभिव्यक्ति पर जोर दिया है। अवस्थी जी विपरित परिस्थितियों में रहकर भी उनका लेखन, उनकी साहित्यिक जिजीविषा,साधना और दृढ़ता के कारण राजेंद्र अवस्थी निरंतर गतिशील रहे हैं। महत्वपूर्ण यह बात है कि अवस्थी जी का रचनाकार सारी आधुनिक प्रासंगिकता के बीच अपनी पहचान बनाए रखने में सफल रहा है। उनकी सच्चाई, ईमानदारी और प्रामाणिक अभिव्यक्ति के कारण उन्हें अपने जीवन में सफलता मिली है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय इस अध्याय में किया है। उनके जीवन परिचय एवं कृतित्व के संबंध में निम्न जानकारी प्राप्त हुई।

2.1 जीवन परिचय :

प्रस्तुत अध्याय में राजेंद्र अवस्थी जी का जन्म, उनका बाल्यकाल, शिक्षा, नौकरी , साहित्यिक योगदान आदि के संबंध में उनके जीवन परिचय को आधार वनाकर जानकारी दी है। अवस्थी जी का जन्म मध्यप्रदेश के जबलपुर में हुआ वहीं उन्होंने अपने बचपन के दिन बितायें हैं। अपने माता पिता से उचित शिक्षा एवं मार्गदर्शन पाकर वे अपने जीवन में सफल हुए है। राजेंद्र अवस्थी जी ने जीवन में नानाविध पक्षों को अपने चश्मे से देखा है, इस देखने में आवरण या औपचारिकता नहीं वरन् अनुभूति की सचाई, बेलोस ईमानदारी एवं अनुभव का सत्य निहित है। सामाजिक विषमता, आर्थिक कटुताएँ, पारिवारिक विश्रंखलता, जीवन की होड़ में उमड़ता स्वार्थ, बेईमानी व भ्रष्टाचार का सैलाब आदि उनकी कहानियों उमड़ता दिखाई पड़ता है। कथा का किसी वर्ग विशेष से संबंध न होकर आम आदमी से संबंध है और यही आम आदमी वर्ग विशेष का जन्मदाता

है। राजेंद्र अवस्थी जी की कहानियों में सामान्य व्यक्ति की तस्वीर है। उनके जीवन परिचय के संबंध में निम्नलिखित जानकारी प्राप्त हुई।

2.1.1 जन्म :

डॉ.राजेंद्र अवस्थी जी का जन्म **15** जनवरी **1931** ई को मध्यप्रदेश के जबलपूर में हुआ। उनके पिताजी का नाम घनेश्वर और माताजी का नाम छोटीबाई था। उनके पिताजी ज्योतिष और संस्कृत के विद्वान होने के साथ-साथ स्कुल के मुख्याध्यापक थे। अवस्थी जी के पिताजी स्वावलंबी थे, वे अपना जीवन किसी दूसरे व्यक्ति पर निर्भर रखना नहीं चाहते थे। वे एक जिम्मेदार पिता के रूप में अपने परिवार से कटिबद्ध थे। वे एक कट्टर ब्राह्मण होने के कारण पूजा पाठ पर विश्वास रखते थे। प्रात:काल उठकर पूजा पाठ करते थे। उनके पूजा पाठ की दिनचर्या के संबंध में डॉ. सविता सौरभ कहती हैं"प्राप्त:काल उठकर पूजापाठ करना उनका नियमित आचरण था। सुर्योदय होने पर तुलसी के एक-एक पत्र को लेकर वे ईश्वर को जगाया करते थे।"[1]

अवस्थी जी के परिवार का जीवनकाल जबलपुर में व्यतीत हुआ है। उनका स्थायी घर आज भी जबलपुर में स्थित है। उनके दादाजी और पिताजी का जीवन जबलपुर में व्यतित हुआ है।

2.1.2 बाल्यकाल और शिक्षा :

अवस्थी जी का बाल्यकाल मध्यप्रदेश के मंडला और बस्तर जनजातियों के बीच व्यतित हुआ है। पिताजी शिक्षक होने के कारण उनका स्थानांतर होता रहता था। अधिकांश समय उनके पिताजी मंडला और बस्तर के क्षेत्र में रहे है। सुरेश नीरव द्वारा उनके जन्म के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए स्वयं अवस्थी जी ने कहा है- "मेरा जन्म देहात में हुआ था। जब से मुझे याद हैं शायद मैंने अपने आप को पहली बार एक गोंड स्त्री की गोद में खेलता हुआ पाया था।"[2] इन गोंड जनजातियों के बीच रहने के कारण उनके साहित्य में उनका जीवन स्थान-स्थान पर प्रतिबिंबित होता है। यह गोंड जाति के निकट संपर्क का ही परिणाम है।

अवस्थी जी को बचपन से ही धूमना फिरना, समुन्दर के किनारे की सैर करना, जंगलो, पहाड़ो के बीच धूमना हमेशा अच्छा लगता था, वे अपने इस शौक का बयान करते हुए कहते है - "मैंने अपने बचपन के दिन छोटे शहरों और देहातों में गुजारे हैं। नदी के किनारे और पहाड़ों के बीच घूमना मुझे हमेशा अच्छा लगा है। धूल भरी कच्ची पगड़ंडी से होते हुए कदम्ब और बनैले सुगंध भरे फूलों के पास पहुँचना हमेशा ताजगी देता रहा है। पहाड़ों पर चढ़ने और उछल कूद करने में मजा आता रहा है और घने जंगल के बीच अपने को नितांत अकेला पाकर खूब चीखने और चिल्लाने का मन हुआ है। और जब भी ऐसा मन हुआ है मैं चीखा और चिल्लाया हूँ।"[3]

बचपन से ही अवस्थी जी को पढ़ने लिखने का शौक रहा है। उनके पिताजी शिक्षक होने के कारण परिवार में कोई व्यक्ति शिक्षा से वंचित नहीं था। अपने शिक्षा के संबंध में बताते हुए अवस्थी जी कहते है - "छोटे शहरों में आरंभिक शिक्षा हुई और बाद की उच्च शिक्षा मध्यम दर्जे के शहरों में हुई।"[4] राजेंद्र अवस्थी जी ने मंडला से बी.ए.परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में नागपुर विश्वविद्यालय में नौकरी करते-करते एम्.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण हुए। उन्हें पत्रकारिता पर लिखे गये शोध-प्रबंध पर कलकत्ता विश्वविद्यालय की पीएच्.डी. की मानद उपाधि सन **1986** में प्राप्त हुआी। हालैण्ड के लायडन विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की। उत्तर प्रदेश सरकार ने अवस्थी जी को डी. लिट. की उपाधि से विभूषित करके भाषा विशेषज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित किया।

2.1.3 नौकरी :

राजेंद्र अवस्थी नौकरी के संदर्भ में बड़े ही भाग्यशाली रहे है। प्रथम नौकरी उन्हें नागपुर में मिली इस संदर्भ में वे स्वयं कहते है - "प्रथम नौकरी मुझे नागपुर में मिली लेकिन, तीन-चार वर्षो के बाद ही मुझे ऐसा लगा कि जैसे कोई हवा मुझे उड़ा ले गयी है।"[5] और वे नागपुर से मुम्बई के 'टाइम्स ऑफ इंड़िया' प्रतिष्ठान में पहुँच गये। वहाँ उन्होंने 'सारिका' पत्रिका का संपादन भार स्वीकार किया। 'सारिका' में रहते हुए

उन्होंने निश्चित अवधि में पत्रिका का प्रकाशन कार्य कर अपनी परिश्रमशीलता, अदम्य उत्साह तथा कार्यकुशलता का परिचय दिया। मुम्बई में अवस्थी जी ने फिल्मीस्तान में 'रणजीत' स्टुडिओ भी खोला था। वे फिल्म बनाना चाहते थे लेकिन फाइनेंसर के फाइनेंस न होने के कारण नहीं बना पाये। तीन-चार साल मुम्बई में रहने के बाद अवस्थी जी के स्वाथ्य पर मुम्बई के जलावायु का हानिकारक परिणाम हुआ। अतः वे मुम्बई छोड़कर दिल्ली में आये।

दिल्ली आकर उन्होंने 'हिन्दूस्तान टाइम्स' से निकलने वाली पत्रिका 'नंदन' का कार्यभार संभाला। सन **1972** में अवस्थी जी ने उनकी प्रसिद्ध पत्रिका का कार्यभार संभाला जिसका नाम 'कादम्बिनी' है। इस पत्रिका को अपने परिश्रम के बलबुते पर उन्होंने अल्पाविधी में मशहूर बनाया। उनके इस परिश्रम के ही फल के कारण 'कादम्बिनी' की बिक्री दिन ब दिन बढ़ती गयी। अवस्थी जी के अनुसार "जिस दिन मुझे कादम्बिनी का सम्पादक बनाया गया उस समय भारत में **23** हजार प्रतियाँ बिकती थी, लेकिन आज तीन लाख के ऊपर प्रतियाँ बाजार में बिकती हैं।"[6]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अवस्थी जी के अध्यवसाय परिश्रम एवं कार्यकुशलता आदि गुणों के कारण अवस्थी जो शीघ्र उन्नति करने में सफल रहे हैं। उनकी प्रामाणिकता, सच्चाई और ईमानदारी आदि गुणों के कारण उन्हें अपने जीवन में सफलता मिली है।

2.1.4 पारिवारिक जीवन :

राजेंद्र अवस्थी जी का जन्म संयुक्त परिवार में हुआ अवस्थी जी के माता-पिता, चाचा-चाची परिवार में हैं। अवस्थी जी के चाचा शिक्षण संस्था के चैयरमैन थे। अवस्थी जी को उन्होंने शिक्षण संस्था में अध्यापक की नौकरी करने का आग्रह किया था लेकिन अवस्थी जी की पत्रकारिता में रूचि होने के कारण उसे अस्वीकार किया। केवल सत्रह-अठारह साल की उम्र में अवस्थी जी का विवाह हुआ। घरवालोंद्वारा इस विवाह को तय किया गया था लेकिन अवस्थी जी को यह विवाह मान्य नहीं था। इसका

कारण बताते हुए अवस्थी जी कहते है- "जब मै इण्टर में पढ़ता था तब मैं अपने क्लास की लड़की से प्यार करता था, इसलिए मैं घरवालोंद्वारा तय की गयी लड़की से शादी नहीं करता चाहता था, परंतु घर में सबसे बड़ा लड़का होने के कारण माता-पिता का विरोध करने की हिम्मत न कर सका।"[7] अंत में अवस्थी जी की शादी उनके घरवालोंद्वारा तय की गयी। उनकी पत्नी का नाम शन्कुतला देवी है। अवस्थी जी के तीन लड़के और दो लडकियाँ हैं। लड़को के नाम है- देवशंकर, शिवशंकर और अशोक लड़कियों के नाम है- पुष्पा और साधना।

2.1.5 काव्य सृजन का प्रारंभ :

अवस्थी जी को बचपन से ही स्कुल में पढ़ते थे तब से कविता करने में रूचि थी। अवस्थी जी को बचपन से ही कविता लिखने और पढ़ने का बड़ा शौक रहा है। वे स्वयं कहते है- "मैं बचपन से जब स्कुल में पढ़ा करता था तब से ही कवितायें लिखता रहा हूँ।आश्चर्य तो इस बात का है कि मैंने अपनी प्रथम रचना अंग्रेजी में लिखी थी,और उस पर तत्कालिन कॉंग्रेस अध्यक्ष डॉ.राजेंद्र प्रसाद ने मुझे पुरस्कार दिया था।"[8]

अवस्थी जी ने कविता लिखकर अपने लेखन कार्य का सृजन किया था, वे आज कहानीकार, उपन्यासकार, प्रकाशक, सम्पादक के रूप में प्रसिद्ध है।

2.1.6 साहित्यिक योगदान :

आठवीं कक्षा में लिखी और तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.राजेंद्र प्रसाद द्वारा पुरस्कृत हुअी एक अंग्रेजी कविता से अवस्थी जी के साहित्य का श्रीगणेश हुआ। हिंदी साहित्य में वे अपनी प्रथम कहानी 'गुंडा'द्वारा अवतरित हुए। इस कहानी पर अवस्थी जी को 'अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता'द्वारा एक हजार रूपये का पुरस्कार मिला था। उनकी दूसरी कहानी 'उलझन' को भी द्वीतीय पुरस्कार मिला था। 'मकड़ी के जाले' नाम से अवस्थी जी का प्रथम कहानी संग्रह हिंदी प्रचारक संस्थान के श्री.कृष्णचन्द वेरी ने प्रकाशित कर दिया था। लेखक की धारणा है कि उनका साहित्यिक जीवन दुर्घटनाओं से भरा है वे स्वयं लिखते है कि - "मेरा लेखन दुर्घटनाओ से भरा है। यानी अंग्रेजी में

पहले कविता लिखना फिर हिंदी का कवि बन जाना और अचानक कथाकार बन जाना और इसी तरह उपन्यासकार के रूप में पहचाना जाना।"[9]

अवस्थी जी की 'बंजारी' युवती के जीवन पर लिखी कहानी 'जलता सूरज' धर्मयुग में प्रकाशित हुई। अवस्थी जी को इस कहानी का अधूरापन महसूस हो रहा था आगे चलकर यही कहानी अवस्थी जी का पहला उपन्यास 'सूरज किरण की छाँव' में परिवर्तीत हो गयी। 'सूरज किरण की छाँव' सन 1958 में राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसी समय अवस्थी जी को आंचलिक उपन्यासकार के रूप में ख्याति मिल चुकी थी। उनका दूसरा उपन्यास 'जंगल के फूल' पहले उपन्यास के छपने के एक दो वर्ष के बाद 1960 में प्रकाशित हुआ। आगे चलकर उन्होंने कथासाहित्य नाटक वैचारिक निबंध आदि में बड़ा योगदान दिया हैं।

2.2 व्यक्तितत्व :

राजेंद्र अवस्थी जी का स्वभाव सौम्य, मिलनसार तथा हँसमुख है। उन्हें देखकर ऐसा महसूस होता है कि यह आदमी कहानीकार, उपन्यासकार कम और कवि अधिक लगता हैं। उनका चेहरा बड़ा मुलायम है। लटवाले हमेशा से करीने से सँभाले हुए बाल, मुख पर चश्मे के पार झाँकती काली आँखें जो कभी शिकायत का मौका नहीं देती। लंबी सी नाक और क्लीन शेव चेहरा, औसतन कद में वह कोमल लगता है, जो कभी किसी से झगड़े-फसाद का आदि नहीं दिखता। अवस्थी जी को हमेशा मुस्कुराने की आदत हैं। इसका कारण वे "अपमे जन्मांक के सातवें स्थान में तीन ग्रहों के साथ सूर्य का होना मानते हैं।"[10] उनकी धारणा है कि उनके जन्मांक में छटे स्थान पर शनि और मंगल होने के कारण उनके शत्रु अपने आप पैदा होते है लेकिन जो ज्योतिष को जानते है, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि हर बार पराजय शत्रु की ही हुई हैं।

2.2.1 निस्वार्थ और दयालु वृत्ति :

अवस्थी जी बेहद दयालु और कोमल हृदय के निस्वार्थ व्यक्ति हैं। उन्होंने कभी किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया। उनके स्वभाव की विशेषता बताते हुए

लक्ष्मीनारायण लाल लिखते हैं - "अपने तमाम समसामयिक लेखक बंधुओं के रचना जगत में स्नेह, सहयोग यहाँ तक की मित्रता का श्रेष्ठ तत्वों को उन्हें सहर्ष दिया है, पर उनसे कभी कुछ नहीं पाया हैं। प्राप्त किया है संभवत: उपेक्षा ईर्षा और अपमान। और ऊपर उन्हीं से बदनामी। यह बात अपने समसामयिकों तक ही सीमित नहीं। कितने नये लेखकों को उन्होंने अपने सम्पादक व्यक्तित्व से प्रकाशित और प्रतिष्ठित किया पर उनमें अधिकांश से इन्हें जो प्रतिदान मिला है उससे हिंदी लेखन के चरित्र को समझने में बड़ी मदद मिलती है।"[11]

स्पष्ट होता है कि राजेंद्र अवस्थी जी का स्वभाव एक निष्कपट व्यक्ति, भीतर-बाहर एक समान प्रसण और करूण चरित्र जैसा है।

2.2.2 स्वाभिमानी प्रवृत्ति :

अवस्थी जी स्वभाव से स्वाभिमानी और परंपरा के कट्टर विरोधक हैं। यह स्वाभिमान उन्हें उनके पिताजी द्वारा विरासत में मिला हैं। उन्होंनें कभी किसी के सामने अपना सिर नहीं झुकाया। अवस्थी जी ने स्वयं की प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि के लिए भीख नहीं माँगी। उन्होंने अपने अनुभवों को ज्यों का त्यों सही प्रकट करने का प्रयास किया है। परिणाम स्वरूप उन्हें सफलता मिली है।

स्वाभिमानी होने के कारण अवस्थी जी ने पराजय स्वीकार करना नहीं सीखा है। जीवन में पराजय करनेवाले व्यक्ति को उनके मतानुसार जीने का हक नहीं है, वे कहते हैं - 'मैंने हमेशा यह काहा है कि आदमी कभी पराजित न हो, हार कर भी जो पराजय महसूस न करे वही आदमी है। अगर पराजय ही झेलना है तो बड़ी-बड़ी ये इमारतें किसलिये है? उससे कूद पड़ो, आत्महत्या कर लो। अगर जिंदा रहना है तो आदमी की तरह जिंदा रहो।"[12] इसप्रकार उनके व्यक्तित्व में स्वाभिमानी प्रवृत्ति दिखाई देती है और वे दूसरों को भी स्वाभिमानी बनने की सीख देते हैं।

2.2.3 असाधारण व्यक्तितत्व :

अवस्थी जी का पूरा जीवन असाधारण व्यक्ति की तरह दिखाई देता है।

उनके असाधारण व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हुए भगवान स्वरूप चैतन्य जी लिखते है - "जहाँ तक मेरी दृष्टि रही है, राजेंद्र अवस्थी हर पल चिंतन में डुबे हुए या हर क्षण साहित्य में रमें हुए या जिंदगी के सवालों से कटे हुए किसी अहमवादी व्यक्तित्व का नाम नहीं वरन् दोस्तों के बीच दोस्तों से दोस्तों की बातें करते हुए बातचीत का पूरा मजा लेते हुए या फिर उनकी तलाश करते हुए एक ऐसे ही असाधारण व्यक्तित्व का नाम है, जो अपने भीतर मौजूद सृजन चेतना और विचार ऊर्जा के प्रवाह को अपने रचनाक्षण को पूरी जिम्मेदारी के साथ बचा लेता है।"[13] इस कथन से अवस्थी जी के असाधारण व्यक्ति होने का सबूत मिलता है।

2.2.4 मित्रों के प्रति स्नेहभाव :

अवस्थी जी के व्यक्तित्त्व से पता चलता है कि उनका स्वभाव उदारमतवादी और स्नेहील हैं। उन्हें अपने दोस्तों के प्रति आदर हैं। वे किसी को कोई शिकायत का मौका नहीं देते। अवस्थी जी अपने मित्रों के प्रति स्नेहभाव रखते है उनके प्रमुख मित्रों में राजेंद्र सिंह बेदी, धर्मवीर भारती, गीतकार शैलेंद्र, कृष्णचन्द, भगवान स्वरूप चैतन्य, लक्ष्मीनारायण लाल, मोहन राकेश, अश्क आदि है जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त किया है।

2.2.5 परिवेशानुकूल बदलाव :

अवस्थी जी चेहरे बदलने के शौकिन है। वे अक्सर मुम्बई आते-जाते रहते थे। मुम्बई जाते समय जिस तरह वे दिखाई देते थे, वापस लौटते समय उनके चेहरे में फर्क दिखाई देता था। अर्थात मुम्बई में आते समय एक और जाते समय कुछ अलग दिखते थे। मुम्बई की उनकी मानसिकता उनके चेहरे को बदलने में कामयाब रहती थी। अवस्थी जी एक बार पन्द्रह दिन 'माथेरान' चले गए, औए पन्द्रह दिन वहॉ रहने के बाद अवस्थी जी वापस लौटे तो अजीब से दिखाई देने लगे। उनकी यह स्थिति देखकर उनके मित्र कृष्णचन्दर जी ने पूछा - "प्यारे भाई ये दाढ़ी किस लिए, उन्होंने कहा कि, 'एक उपन्यास लिख रहा था। माथेरान में पेड़ों और पर्वतों के सिवाय क्या है। उन्हें चेहरा तो

दिखाना नहीं था, इसलिए मैं इसे पाल रहा हूँ।" [14]

राजेंद्र अवस्थी से आध सप्ताह के बाद कृष्णचन्दर उनसे फिर मिले तो उन्होंने अवस्थी जी को 'बुल्गानिन कट' में देखा। इस राज को जानने का प्रयत्न करने पर कृष्णचन्दर को पता चला कि एक पारसी लड़की के कहने पर उन्होंने बुल्गानिन कट दाढ़ी रखी है। एक दिन मोहन राकेश और अवस्थी जी 'शेटू विन्सटर' में मिले तो राकेश जी ने उनकी दाढ़ी जबरन शेविंग ब्लेड़ से साफ कर दी थी, और बताया था कि "अजीब अहमक आदमी है अवस्थी भी। मुझे इसकी दाढ़ी पसंद नहीं आयी, और जब मेरे कई बार कहने पर भी उसने दाढ़ी नहीं बनवायी तो एक ही रास्ता था, आखिर वहीं मैंने अपनाया। उसके बाद अवस्थी जी ने दाढ़ी नहीं रखी।"[15]

अर्थात अवस्थी जी परिवेशानुकूल बर्ताव करते है।

2.2.6 विद्रोही व्यक्तित्व :

अवस्थी जी का व्यक्तित्व विद्रोहन्मुखी रहा है। उन्हें बँधी-बँधी सी जिंदगी या परंपराओं से सख्त घृणा है, इसलिए विद्रोह के स्वर उनके साहित्य में हमें दिखाई देते है। सुरेश यादव उनके विद्रोही साहित्य और व्यक्तित्व को लेकर कहते है- "राजेंद्र अवस्थी का साहित्य आने वाली दुनिया की पहचान का साहित्य नहीं होगा बल्कि शायद उसका एक अंग भी। उसी साहित्य का एक टुकड़ा आज भी जनवादी चेतना के साथ जुड़कर टुटे और पराजित लोगों के बीच खड़ा हुआ उन्हें विद्रोह के लिए मजबुर करता है। इसलिए मैं राजेंद्र अवस्थी को एक विद्रोहन्मुख लेखक मानता हूँ।"[16]

अवस्थी के समुचे साहित्य में कई स्थलों पर उनका विद्रोह स्वर मुखरित हुआ है। उनका साहित्य परंपराओं,कहीं मानव के शोषण का,भ्रष्ट राजनेताओं का, सदियों से चली आ रही विवाह संस्था का विरोध उनके समुचे साहित्य में हमें दिखाई देता है।

2.2.7 अवस्थी जी पर प्रभाव :

अवस्थी जी ने रूस, फ्रांस, इंगलेंड, अमेरिका की विदेश यात्राएँ की हैं। इसीकारण अवस्थी जी पर विदेशी संस्कृति का ज्यादातर प्रभाव दिखाई देता है। उन पर

15515

विदेशियों के मुक्त जीवन का प्रभाव दिखाई देता है। वे कहते हैं - "हमारे यहाँ स्त्री स्वयं कमाती नहीं। वह पति पर निर्भर होने के कारण परिवार, विवाह जैसी समस्या में बँधी हुई है लेकिन विदेशों में ऐसा कुछ भी नहीं है। विदेशों में 19 साल के बाद फादर और मदर उनके लिए फ्रेंड बन जाते हैं।"[16] स्पष्ट है कि अवस्थी जी पर विदेशियों के स्वच्छन्दी जीवन का प्रभाव है। अवस्थी जी ने बस्तर और मंडला क्षेत्र के आदिमों की 'घोटुल' जैसी संस्था में कई दिन बिताये हैं। उनपर पहाड़ी, आदिम जनजीवन का भी प्रभाव देखने को मिलता है।

2.3 राजेंद्र अवस्थी का कृतित्व :

राजेंद्र अवस्थी जी ने साहित्य में काफी लिखा है। कविता से लेखक जीवन का श्रीगणेशकर आज कहानीकार, उपन्यासकार, सम्पादक के रूप में वे परम प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है उसमें अदम्य उत्साह है। उन्होंने लेखन की शुरूवात बचपन में ही की थी। हिंदी साहित्य जगत में उनका आगमन सन 1956 में 'सुमित्रा' पत्रिका में प्रकाशित कहानी 'उलझन' से हुआ। तब से अवस्थी जी बड़ी लगन के साथ साहित्य साधना से जुड़े हुए हैं। कहानी लिखते-लिखते अवस्थी जी का उपन्यास के क्षेत्र में आगमन हुआ। अवस्थी जी ने सिर्फ कहानियाँ और उपन्यास नहीं लिखे बल्कि यात्रा वृत्तांत, नाटक, वैचारिक साहित्य आदि भी लिखा है। उन्होंने संपादन तथा अनुवाद कार्य भी किया है। उनकी साहित्य यात्रा इस प्रकार की हैं -

2.3.1 उपन्यास साहित्य :

ग्रामांचलिक उपन्यासों की विकास यात्रा में राजेंद्र अवस्थी का स्थान अग्रणी है। उनका 'सूरज किरण की छाँव' यह पहला उपन्यास है।

- **सूरज किरण की छाँव** - 1958

'सूरज किरण की छाँव' उपन्यास में उन्होंने एक आदिम लड़की की संवेदनापूर्ण कहानी प्रस्तुत की है, जो बंजारी से मिसेज बेन्जो और मिसेज बेन्जो से उषा बन जाती है। भोली आदिमों की कन्याओं को अपने प्रभुत्व और शादी करने का लालच

देकर कई संपन्न व्यक्ति उनका जीवन लूटते रहे हैं। इसका चित्रण उपन्यास में बहुत ही सुंदरता से किया गया है। ईसाई मिशनिरियों के आदिमों पर बढ़ते प्रभाव धर्म और नाम परिवर्तन करवाने का सत्य उपन्यास में बड़े ही कलात्मक रूप से उठाया गया है। बंजारी का चरित्र उपन्यास का महत्वपूर्ण और प्रमुख चरित्र है। क्रमश: उसका संपन्न व्यक्ति के पुत्र के द्वारा लुटा जाना, फिर मिसेज बेन्जो के रूप में इसाई मिशनरीज और देवता के रूप में महादेव की जगह येशु को विवशता से स्वीकार कर जोसेफ से शादी और बाद में वेश्या के रूप में होटल में रहना उसके जीवन की व्यथा, वेदना और आँसू से युक्त दु:ख के परिपूर्ण पक्ष है। उपन्यास की भाषा में आदिम जनजीवन से लिये गये शब्द प्रयुक्त कर उसे यथार्थ के समीपतर लाने का प्रयत्न लेखक ने किया है। अवस्थी जी का यह उपन्यास आंचलिक उपन्यासों में स्तंभ कहा जा सकता है।

- ***जंगल के फूल*** **- 1960**

में उनके आदिम जनजीवन को निकट से समझने और उसे यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने की साद ने 'जंगल के फूल' उपन्यास को जन्म दिया। अवस्थी जी के अनुसार - "सदा से उपेक्षित बस्तर के आदिवासियों के प्रति मेरे मन में प्रारंभ से ही सहानुभूति रही और वहाँ सात-आठ माह विशेष रूप से रहकर मैंने इस उपन्यास का प्रणयन किया।"[17]

'जंगल के फूल' में अवस्थीजी ने मध्यप्रदेश के बस्तर जिले के आदिवासियों को केंद्र में रखकर यह दिखाया है कि यहाँ के निवासी शहरी सभ्यता से दूर रहकर अपनी प्राचीन धरोहर को कौमार्य की भांती सुरक्षित रखते हैं। उपन्यास की कथा 'गढ़बंगाल' नामक एक गाँव की है। वहाँ सिर्फ घास-फूस के बीस-बाईस मकान है। वहाँ इन लोगों की सांस्कृतिक जिंदगी का आकर्षण स्थल 'घोटुल' भी है। वे सारे तणावों से दूर रहकर कल की चिंता नहीं करते हैं। वे तिज-त्यौहार, देवी-देवता की पूजा, शादी-विवाह, मेहमानों के आगमन आदि अवसरों पर नृत्य-गीत का आयोजन भी करते हैं। बस्तर का गोंड हमेशा अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहा है, यह भी लेखक ने इस

उपन्यास में दिखाया है। गुण्ड़ाधूर, डिबरीधूर, सुलकसाये, महुआ आदि ऐसे पात्र हैं जो शोषकों के खिलाफ विद्रोह करने को कटिबद्ध होते हैं। वे जंगल की धरती पर अपना अधिकार मानते हैं। उन्हें इस धरती से काटनेवाले गोरों के खिलाफ भी विद्रोह करते हैं।

डॉ.यादवराव धुमाळ के मतानुसार-"घोटुल और पंचायतें उनके सामाजिक जीवन के मुख्य आधार है। उनके समाज जीवन की व्यवस्था और रीति-रिवाज के चित्र उनके घोटुल में मिलतें हैं। पंचायतें इन लोगों के लिए न्यायदान काम करती है। विवादों और उल्लासों के अवसर पर पंचायत बुलाने का उनका रिवाज होता हैं। इस उपन्यास में गोंड़ जाति का सामाजिक जीवन सांस्कृतिक एवं राजनीतिक चेतना के साथ साकार हुआ है।"[18]

- **उतरते ज्वार की सीपियां** - 1968

अपने फिल्मी जीवन के बहु अनुभवों को शब्दों में अभिव्यक्ति देने के लिए ही इस उपन्यास का प्रणयन हुआ है। रणजति स्टुड़िओ में अवस्थी जी ने स्वयं फिल्म निर्माण कार्यालय खोला था, उसी अनुभूत वास्तविकता को प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस उपन्यास में है। फिल्मी जीवन में लड़कियों का व्यापार, फिल्मों में काम करने के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर देने के लिए उत्सुक लड़कियाँ, फाइनेंन्सरों, निर्माताओं का ज्योतिष और भाग्य पर आश्चर्यजनक अंधविश्वास आदि उपन्यास का विषय बना है।

- **जाने कितनी आँखें** - 1970

अवस्थी जी के बुंदेल खंड के जन-जीवन पर उपन्यासों में 'जाने कितनी आँखें' को सर्वप्रथम रखा जाता है। उपन्यास की कथा-वस्तु जहाँ अंचल विशेष से संप्रक्त है वहीं लेखक के व्यक्तिगत जीवन के अतीत का आधार भी बनी है।

उपन्यास में विशेष रूप से गावों की राजनीति का चित्रण है। अंग्रजों के जमाने में जहाँ पढ़ा-लिखा मास्टर भी एक छात्र शासन कर सकता था, थानेदार की चापलूसी के लिए गाँव भर का उत्सुक रहना,बड़ी बूढ़िया जो गाँव की दुखद घटनाओं की सहज रूप में लेती हैं और जिसे चाहे जो चाहे कह देने में नहीं चूकती,साथ ही मास्टर के

पुत्र और सुवेगा के रूप में बालमनोविज्ञान का यथार्थ चित्रण उपन्यास में किया गया है।

- **बहता हुआ पानी** - 1971

एक कलाकार की जिंदगी इस उपन्यास की कथा वस्तु का केंद्रिय विषय है। जतीन उपन्यास का प्रमुख पात्र है। निगार, वीणा और जरीना संपूर्ण उपन्यास में उक्त तीनों युवतीयाँ जतीन के निकटस्थ बने रहने में गौरव महसूस करती है पर जतीन सिर्फ निगार की ओर आकर्षित है। कला प्रेमी युवतियाँ उसके चारों ओर घूमती रहती हैं। उससे लिपटी रहती हैं और उनके बीच वह अपनी कल्पना के जालों को बुनता हुआ भंवर की तरह फसा रहता है। वह प्रेम में जीने और प्रेम में मरने वाली रिचार्ड क्रेसो की सेंट टेरेसा को दुनिया भर की मॉड़ल औरत मानता है वह निगार में यह सब पाने की कोशिश करता है, लेकिन निगार भी उसकी जिन्दगी से चली जाती है।

यह उपन्यास आधुनिक नारी के मन की घुटन, अकुलाहट, असंतोष और जिजीविषा की उत्कट लालसा को उजागर करता हुआ उसकी असहायता और विवषता का प्रतीक बनकर समाज के धनी ऐय्याशों के मुँह पर एक करारा तमाचा लगाता है।

- **अकेली आवाज** - 1976

अवस्थी जी का यह उपन्यास बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। उपन्यास का नायक 'बटू' एक असामान्य मनोविज्ञान का किशोर है जो एक उच्च्य परिवार के तथाकथित सभ्य माता-पिता की अकेली संतान है। वैभवपूर्ण लालन-पालन एवं माता-पिता का अटूट लाड-प्यार जहाँ उसमें अहंकार की भावना उत्पन्न करता है वही उसका अकेलापन उसमें असुरक्षा की भावना भी भर देता है। इस उपन्यास में अवस्थी जी ने यह स्पष्ट किया है कि उच्चता का अनुठा दर्प मनुष्य को कितनी समस्याओं के बीच खड़ा कर देता है। बच्चों में कुछ जन्मजात संस्कार होते है किंतु उनके चरित्रों का अधिकांश विकास उस परिस्थिति का परिणाम होता है। इसका सुंदर चित्रण अवस्थी जी ने किया है।

- **बीमार शहर - 1976**

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत 'बीमार शहर' यह उपन्यास शहर की यांत्रिकता और शहर की बीमार व्यवस्था के चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। अपने आप से कटे हुए और अपने आप में लिप्त मानव के मन का मनोवैज्ञानिक पक्ष चित्रित करने का सफल प्रयास अवस्थी जी ने यहाँ किया है।

- **मछली बाजार - 1981**

यह अवस्थी जी का अत्याधिक चर्चित उपन्यास है इस उपन्यास में **21** वीं सदी के टूटते, बिखरते हुए परिवारों और वर्तमान राजनीति का ज्वलंत चित्रण किया है।

- **भंगी दरवाजा - 1992**

यह अवस्थी जी का राजनीतिक उपन्यास है।उपन्यास में राजनीति पर व्यंग्य, नेताओं के झूठे आश्वासन, पति-पत्नी में अनबन, राजनीतिक गंदगी, चुनाव आदि बातों को कथात्मक, पूर्वदीप्ति और कहीं-कहीं डायरी शैली में प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में मांडू जैसे सौंदर्यपूर्ण स्थान का चित्रण बड़े सुंदर ढंग से किया है।

2.3.2 कहानी साहित्य -

अवस्थी जी ने अपनी कहानियों को शिल्प के नये परिवेश में सजाया-संवारा है। उन्होंने कहानी साहित्य को नयी दिशा देने का प्रयत्न किया है। यह उनकी अपनी एक उपलब्धि है। अवस्थी जी ने परंपरा व नवीनता दोनों का समन्वय कर अपनी कहानियों में अपूर्व ऐतिहासिकता का परिचय दिया है।

अवस्थी जी ने सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक, सांस्कृतिक तथा समस्यात्मक कहानियाँ लिखी हैं। अवस्थी जी की काहानियाँ निम्मलिखित कहानी संग्रहों में प्रकाशित हुई -

- लमसेना - 1976
- एक फिसली हुयी मछली - 1978
- मेरी प्रिय कहानियाँ - 1982

-	दो जोडी आँखें	-	1983
-	एक रजनीगंधा चोरी	-	1983
-	प्रतिक्षा	-	1985
-	ग्यारह राजनैतिक कहानियाँ	-	1986
-	महुआ आम के जंगल	-	1987

2.3.3 नाटक साहित्य -

कहानी और उपन्यास के अलावा अवस्थी जी ने एक नाटक भी लिखा है जिसका नाम 'बूची टेरेस' है। इसका प्रकाशन सन **1989** में हुआ है। प्रस्तुत नाटक में 'बूची टेरेस' में रहनेवाले सभी विवाहित पात्रों के जीवन की घूटन और दर्द को अभिव्यक्त किया है।

2.3.4 यात्रा वृत्तांत -

1.	दोस्तों की दुनिया	-	1980
2.	सैलानी की डायरी	-	1984
3.	हवा में तैरते हुए	-	1986

2.3.5 वैचारिक साहित्य -

1.	शहर से दूर	-	1977
2.	काल चिंतन	-	1982

2.3.6 संपादित साहित्य -

1.	बाइस प्रेम कहानियाँ	-	1986
2.	सत्रह आंचलिक कहानियाँ	-	1986
3.	श्रेष्ठ भारतीय कहानियाँ	-	1987

2.3.7 अनुदित साहित्य -

1.	जीवन के पृष्ठ	-	1984
2.	युग-पुरूष नेहरू	-	1984

समन्वित निष्कर्ष -

राजेंद्र अवस्थी का लेखन कार्य विषय वैविध्य रखता है। उन्होंने पहाड़ी अंचलों में स्थित आदिम जनजीवन की तलाश के साथ-साथ फिल्मी जीवन, अपने वैयक्तिक जीवन, कलाकारों का जीवन, बालकों का मनोवैज्ञानिक जीवन, यांत्रिकता से बीमार बने शहरों का जनजीवन आदि विविधतापूर्ण जनजीवन का चित्रण करनेवाले अवस्थी जी का साहित्य सर्वांग परिपूर्ण लगता है। इसमें लेखक की अनुभूति और संवेदना का यथार्थ चित्रण किया गया है। उनकी साहित्यिक यात्रा के दौर में उन्हें अनेक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न मित्रों का मार्गदर्शन हुआ है। जबलपुर नगर में जन्म होने पर भी आदिम जनजीवन के प्रति उनका आकर्षण रहा जो उनके सामाजिक साधारणीकरण के व्यक्तित्व की गवाही देता है।

उन्होंने प्रेमचंद, रेणू, भैरवप्रसाद, नागार्जुन के बाद ग्रामांचलो की साहित्यिक गति को कई रचनाओं के माध्यम से अगले मोड़ पर लाकर रखा है। अध्यापक पिताजी के बार-बार तबादले होने के कारण अवस्थी जी का बचपन मध्यप्रदेश के बस्तर में स्थित आदिम जनजातियों के बीच गुजारा,वहाँ की गोंड़ जाति के प्रति उनके मन में प्रेम रहा है,ताकि उनके बीच में ही वे पलते रहे परिणाम स्वरूप अपने साहित्य के माध्यम से आदिमों के जनजीवन की यथार्थता को उन्होंने वाणी देने का काम किया है।

उच्च्य विद्याविभूषित होकर भी सामान्य जनता के प्रतिनिधि लेखक रहे, 'जंगल के फूल','जाने कितनी आँखें' ये उपन्यास इसके गवाह है।उनकी कई कहानियों और उपन्यासों में जनवादी विचारधारा के विचार समर्थता के साथ उभरे हैं।नौकरी के दौरान भी उन्हें विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त हुए, पत्रकारिता के क्षेत्र में,फिल्मी दुनिया के क्षेत्र में उन्होंने प्रभावी काम किया है।वे स्नेहील, विद्रोही व्यक्तित्व के ख्यातनाम साहित्यिक रहे।उनके साहित्य में उनके जीवन का प्रतिबिंब यत्र-तत्र देखने को मिलता है।उन्होंने जो देखा, भोगा, अनुभव किया उसका चित्रण यथार्थ रूप में उनके साहित्य में देखने को मिलता है।संक्षिप्त में अवस्थी जी का साहित्य उनके जीवन का प्रतिबिंब है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - राजेंद्र अवस्थी का कथा साहित्य, साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.- 2000, पृ.क्र. - 17 18

2) सुरेश नीरव - राजेंद्र अवस्थी - इक्कीसवीं सदी की दृष्टि, प्रमोद प्रकाशन, दिल्ली,प्र.स.- 1982, पृ.क्र. -123

3) राजेंद्र अवस्थी - मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, द.स.-1978, पृ.क्र.- 6

4) डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - राजेंद्र अवस्थी का कथा साहित्य, साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.- 2000, पृ.क्र.- 19

5) डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - वही, पृ.क्र.- 20

6) डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - वही, पृ.क्र.- 19

7) डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - वही, पृ.क्र.- 20

8) सुरेश नीरव - राजेंद्र अवस्थी - इक्कीसवीं सदी की दृष्टि, प्रमोद प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.- 1982 , पृ.क्र.-122

9) सुरेश नीरव - वही, पृ.क्र.- 122

10) सुरेश नीरव - वही, पृ.क्र.-17

11) सुरेश नीरव - वही, पृ.क्र.-111

12) डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - राजेंद्र अवस्थी का कथा साहित्य, साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.- 2000, पृ.क्र.- 23

13) सुरेश नीरव - राजेंद्र अवस्थी - इक्कीसवीं सदी की दृष्टि, प्रमोद प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.- 1982, पृ.क्र.- 103, 104

14) सुरेश नीरव - वही, पृ.क्र.- 112

15) सुरेश नीरव - वही, पृ.क्र.- 113

16) डॉ.भाऊसाहेब परदेशी - राजेंद्र अवस्थी का कथा साहित्य, साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.- **2000**, पृ.क्र.- **27**

17) सुरेश नीरव - राजेंद्र अवस्थी - इक्कीसवीं सदी की दृष्टि, प्रमोद प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.- **1982**, पृ.क्र.- **20**

18) डॉ.यादवराव धुमाल - साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमुलक तुलनात्मक अध्ययन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.स.- **1997**, पृ.क्र.- **152-153**